॥ श्री राधाकृष्णोविजयति ॥

॥ श्री गोराङ्ग जयति ॥

शुकदूत

रचयिता—

श्री मोहिनीदेवी जी

५०० प्रतियाँ] १९७० ई. वसंत पंचमी सम्वत् २०२६ वि० [न्योछावर १.००

Scanned by TapScanner

★ समर्पण ★

यह पुस्तक शुकदूत श्री मोहिनीजी के इष्टदेव श्री राधा रमण देव जी के चरणों में अर्पित है। तथा निकुंज लीला प्राप्त प्रातः स्मरणीय माध्व गौड़ेश्वराचार्य्य परमहंस चूड़ामणि श्रील श्री अनन्त श्रीविभूषित पं· श्रीबाबा रामकृष्णदास जी महाराज तथा मोहिनी के बाबा गुरु परमाराध्य माध्व गौड़ेश्वर सम्प्रदायाचार्य्य गो०श्री १००८ श्रीवनमालीलाल जी महाराज की प्रीत्यर्थ समर्पित है।

तथा जिन के अनुग्रह से यह पुस्तक छपी है उन श्री१००८ श्रीबाबा कृपासिंधुदास जी महाराज एवं मोहिनी जी के गुरु देव श्री १००८श्रीगोस्वामी अरविन्द लोचनजी महाराज तथा अनेक पुस्तकों के अनुवादक श्री १००८ बाबा कृष्ण दास जी महाराज (कुसुम सरोवरवालों) को शतशः प्रणाम !

प्रकाशक—

डाक्टर, सत्यवीरसिंह जी चौहान
कुँवर अजयवीरसिंह जी चौहान

सम्पादक—

पं० जयजयरामजी दुबे

Scanned by TapScanner

॥ श्री राधारमणो जयति ॥

❀ जय गौर ❀

भूमिका

यह "शुक दूत" नामक ग्रन्थ भक्ति हृदया श्री मोहिनी देवी जी का पंचम पुष्प है। महान कवि श्री नन्दकिशोर जी द्वारा रचित इस ग्रथ की संस्कृत प्रतिलिपि इनको श्री बाबा कृष्णदास जी से मिली थी। जिसका इन्होंने संक्षिप्त पद्यानुवाद कुछ दिनों में ही कर दिया जिस की श्री बाबा जी महाराज तथा अन्य सज्जनों ने बहुत प्रशसा की और बाबा जी महाराज इसको कुसुम सरोवर भी छपवाने के लिये ले गये, किन्तु कई कारणों से छप नहीं सका।

अब इसके प्रकाशन का अवसर मिला है। यह ग्रंथ ११ सर्गों में है, किन्तु संक्षिप्त होने के कारण ४ सर्गों में विभाजन कर दिया है जिसको पढ़ने से पूरे ग्रथका आनन्द मिलेगा और बृज विरह में डूब जाने से बृज से अलग रहने पर भी बृजवास का फल मिलेगा यह मेरी भावना है। बहुत विदुषी न होने पर भी श्रीमोहिनी जी ने इस ग्रन्थ का ऐसा सरस और हृदयंगम अनुवाद कर दिया है, जो कि इनकी लोकोत्तर प्रतिभा का द्योतक है।

इनके ग्रंथों की महान् कवि डा० श्री बरसानेलाल जी चतुर्वेदी ने बहुत प्रशंसा की है और जगत् विख्यात भक्तिमति श्रीमीरा देवीजी

से तुलना की है, जिसके लिये अनेक प्रणामों के साथ धन्यवाद है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन सज्जनों ने सहयोग दिया है उनके लिये भी कृतज्ञता प्रकाशन करता हूँ।

(१) रामायण के विद्वान् पंडित श्री जयजयरामजी दुबे

(२) पंडित हरिनारायण जी मैंणवाल तथा उनके सुपुत्र श्री राधारमण जी शर्मा।

(३) श्री कृष्णवीरसिंह जी (रसमई)

(४) श्री चन्द्रपालसिंह जी राठौर जैतपुरा।

इस ग्रन्थ में प्रेस की कतिपय अशुद्धियाँ रह गई हैं, जिन पर भावुक सज्जन ध्यान न देकर पढ़ते रहें और श्री राधारमण चरणार्विन्द तथा और गौरचरणार्विन्द का प्रेम रसास्वादन करें।

श्री मोहिनी देवी जी इस असार संसार को त्याग कर बृजेश्वरी श्री राधारानी के लोक में पहुँच गई हैं, परन्तु उनको तो हम अपने मध्य में ही समझते हैं।

जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धा कवीश्वरा।
नास्ति येषां यशः काये जरा मरणजंभयम ॥

—कुं० अजयवीरसिंह चौहान

Scanned by TapScanner

❀ जय गौर ❀

❀ शुकदूत ❀

—प्रथम सर्ग—

दोहा—श्री हरि गुरु को ध्यान करि, अरु भक्तन शिर नाय।
शुकदूतहिं वर्णन करूँ, जासों प्रेम दृढ़ाय ॥ १ ॥
रचना नन्दकिशोर की, करूँ पद्य में गान।
नन्दकिशोर सुधारिए, मोहि न कविता-ज्ञान ॥ २ ॥
विघ्नहरन राधारमन, नवहुँ माथ सति भाइ।
हिरदे जुगल विराजिए, कृष्ण विरह चहुँ गाइ ॥ ३ ॥

चौ० कोटि रविन सम परम प्रकाशा। द्वारावति पूजित सब आशा ॥
विश्वकर्म्मा बहु महल बनाए। कूप, बाग, बन, ताल सुहाए ॥
मोर चकोर सुचातक बोलैं। चक्र सुदर्शन रक्षक डोलैं ॥
मणिन रचित सुन्दर अँगनाई। सिन्धु मध्य यह पुरी सुहाई ॥
मन्दिर छवि सुन्दर बहु भाँती। देवनहू के मनहिं लुभाती ॥
देव विमानन फूल गिरावैं। सिद्ध मुनी जन स्तुति गावैं ॥
जहँ रम्भादि अप्सरा गावैं। सुर नर गन्धर्वहु नित आवैं ॥

Scanned by TapScanner

भर्राहि कुबेर जहाँ भण्डारे । वन्दीजन जय २ उच्चारे ॥
यदुबंशिन को सुयशु उजागर । देवन सम डोलैं गुण आगर ॥
सोलह सहस आठ पटरानी । सर्व सुशील सकल गुण खानी ॥
एक दिवस हरि शोभा निरखत । देखि पुरी मन में पछितावत ॥

दोहा—सबु वैभव फीको लगै, बृज पटतर कछु नाँइ ।
धिक २ जीवन मम अहो, हरि कहि २ पछिताँइ ॥ ४ ॥
कहा करूँ वैभव विपुल, राधा विनु किमिजीउँ ।
विरहानल में दहउँ तनु, कै विषु घोरि कै पीउँ ॥ ५ ॥
पंख अहो विधि नहिं दिए, उड़ि जातो बृज देश ।
यहाँ राज्य ऐश्वर्य में, पाऊँ वहुत कलेश ॥ ६ ॥

चौ० श्री राधे मम जीवन मूरी । क्योंजु भई तुम मोसों दूरी ॥
तोर विरह अब सह्यो न जाई । अब कोई तुमसों मोहि मिलाई ॥
सुमुखि तोर मोहि दर्श करावै । तोर बिरह मम गात जरावै ॥
कुलिश समान कठिन भई छाती । क्यों न विरह में ये फटि जाती ॥
अहो ऋणी मैं भयो तिहारो । कोटि जनम लगि नहीं निस्तारो ॥
वहै प्रेम समुद्र बृज माहीं । मैं हतभाग्य जो पावत नाहीं ॥
अमिय तुल्य जलु जमुना केरो । सोहू छुटो भाग्य वश मेरो ॥
एहि समुद्र कर जल अति खारा । एहि ते मनु नहिं जुड़हि हमारा ॥
नाहिं पुलिन वंशीवट छाईं । कहँ गोवर्धन अरु रवि जाई ॥
कहँ वे रास केलि कुंजन के । जहाँ न मनहूँ जाहिं ऋषिजन के ॥
बालभाव कहँ जसुदा केरो । कोई न यहाँ कान्ह कहि टेरो ॥

Scanned by TapScanner

कहँ मण्डली ग्वाल वृज केरी। कहाँ तमाल धूप को बेरी ।।
यह लोचन तव रूप बिकाने। अब तो हैं यह फिरत दिवाने ।।

दोहा—बिरह विवश हरि अस भए, तनकी नाहिं सम्हार।
आज्ञा दीन्हीं दारुकहिं, रथ को करहु तयार ।। ७ ।।

चौ० दारुक स्यंदनु तुरतहिं लावा। रत्नजटित कपिध्वजा लगावा ।।
रथ आरूढ़ भए वृज राजू। संग लिए सब राज समाजू ।।
यदुवंशी सब रुखहिं बिलोकत। ऋद्धि-सिद्धि मिलि स्तुति गावत ।।
लक्ष्मी सम नृप सुता सुहाई। हरि को किन्तु न कोऊ भाई ।।
चलत मार्ग नहिं लागी देरी। मार्ग विलोकी वस्तु घनेरी ।।
को उपवन की कहै निकाई। निरखत नन्दन वनहिं लजाई ।।
तरुवर तर सिंहासन सुन्दर। जेहि पर बैठि गए तब गिरिधर ।।
तेहि क्षन कोयल बोली बानी। प्रेम विवश प्रभु राधा जानी ।।
सुआ सुकी मृदु वचनन बोलैं। अपने मन की वात न खोलैं ।।
प्रेमातुर हरि सुरति भुलानी। प्राप्त भई मम प्रिया सयानी ।।
बोलहु छिपि वल्लभा सुप्यारी। क्यों अब भई दृष्टि सों न्यारी ।।
विरह-ताप में जरि मैं जाऊँ। क्यों राधे मैं कपटी भाऊँ ।।
छिपी २ क्यों बोल सुनावो। क्यों नहिं मोरेसन्मुख आवो ।।
बड़ अपराध प्रिया मैं कीन्हा। जो मैं वास द्वारिका लीन्हा ।।
अपराधी मैं प्रिया तुम्हारो। विचरहुं विरहानल को मारो ।।
मो अपराध न मन में धरिये। मेरे संग बात अब करिये ।।

दोहा—करि २ प्रभु नर लीला, गिरे धरणि मुरझाइ।
कामी इव तड़पत पड़े, राधे राधे गाइ ।। ८ ।।

कोहू करि रही बीजनी, मन्द मन्द सुखयारि।
कोई लिये गुलाबु जल, रही श्याम मुख डारि ।। ६ ।।

चौ० कबहूँ सुधि कबहूँ सुधि हीना। राधे बोल सुनाउ प्रवीना ।।
धरि कछु धैर्य उठे यदुराई। चरत २ हरिणी एक आई ।।
हरिणी क्यों अभिमान बढावै। मो प्यारी सम नैन न पावै ।।
हुइहइ वृज रोवति मम प्यारी। भोगो मैं द्वारिका मँझारी ।।
पिय पिय रटनि सुनाइ पपीहा। विरहिनि उर सुलगाइ पपीहा ।।
ता सन बोलि कहत गिरधारी। दुःखी सखा तुमहूँ अति भारी ।।
संगी तुमहुँ विरह दुःख पाये। विरह वज्र दुःख सकल उठाये ।।
मैं द्वारिका प्रिया वृज माहीं। विधि दुःख दियो सह्यो ना जाई ।।
इत कोको कौं निरखि विहारी। रोय उठे अँसुअन जल डारी ।।
विधना हम तुमकौं दुःख दीन्हों। हम तुम सो भरि अँचलु लीन्हों ।।
जरी तुम्हहु दुःख विरह अंगारी। संगिनि तुम्हहू बनी हमारी ।।
मलया पवन झकोरा खायो। सर्व जनन को दुःख दर्शायो ।।
विरही कृष्ण बहुत दुःख पायो। अहा प्रेत तू कितते आयो ।।
मोकूं तौ संतापु बढ़ायो। विरह ताप में मोहि जरायो ।।
मलय पवन सों बोलत बानी। अहो सखा तुम सब सुख दानी ।।
सर्व जगह के विचरन वारे। नारद सम हैं सखा तुम्हारे ।।
उचित नाहिं तुम मोहि सतावौ। वहु अनुचित तुम दुःखी बनावौ ।।
हुइ तुम मोर सखा वृज आये। बनि अब कुटिल संदेश न लाये ।।
पतितन संग दोष सब भाई। नहिं काहू को भाव सुहाई ।।
अहो देवरात्री हुइ आई। अजहूँ न प्यारी मोहि मिलाई ।।

Scanned by TapScanner

पूर्व दिशा हरि चन्द्र विलोकत । ह्वै मन विवशचन्द्रसों बोलत ।।
तुर्माहि जो प्यारी परैं दिखाई । तुम्हरे रूप सौं रूप सवाई ।।
घटत बढ़त विरहिनि वश शापू । राहु ग्रसनकर अति संतापू ।।
गौतम श्रापहिं छिद्र तुम्हारे । प्रिया तुल्य करि पातक भारे ।।
निस्कलंक वह तू सकलंका । छिपि जारे कहूं चन्द्र अशंका ।।
हे शशि तुम अति सुन्दर गाता । तबहुँ कुटिल पन तुम्हहिं सुहाता ।।
आशुतोष माथे बैठारे । लक्षण कुटिल न तबहुँ बिसारे ।।
नहिं चन्दा तुम सुखदा अहहू । विरहन गाति जरावत रहहू ।।
अरुण वरण ह्वै विरह जगावौ । गरलबन्धु कौं साथ बुलावौ ।।
विरहिनि शाप विवश गति तेरी । यह भई तवहुँ न वानि निवेरी ।।
आम वृक्ष कोकिल मृदु वानी । तब हरि वासों कहत बखानी ।।
हे कोयिल तू बड़ दुःखदाई । एहि मिसि विधि कालो उपजाई ।।
विरहिन शाप श्याम तनु भयऊ । तवहुं न तोरे अवगुन गयऊ ।।
जन्मत ही निज वंश विछोहू । काग वंश नैं पालत होहू ।।
तुम्हरे वचन वज्र सम अहहों । कहाँ छाँड़ि तुमको हम रहहों ।।
तुम कोयिल मम जीवन लावहु । जो राधा कहि वचन उचारहु ।।
निजप्रतिबिम्ब सों बोलत वानी । बृज के दूत ताहि पहिचानी ।।
कहो मित्र कुशल वृज केरी । किमि जीवै वह राधा मेरी ।।
तव प्रतिविम्ब न उत्तर दीन्हों । पुनि हरिने आगे चलि दीन्हों ।।
कहुँ २ सुधि वेसुधि आई । मणिमय खम्भ सों लिपटे जाई ।।
अहो प्रिये हा धन्य जो आई । विरह ग्रस्त वेदना मिटाई ।।
खम्भ लिपटि करि चुम्बन कीन्हो । राधा मिलनसरिस सुखचीन्हों ।।
परम पुलकि गद्गद् भई वानी । प्यारी राधा सम पहचानी ।।

Scanned by TapScanner

खम्भ माँहि राधा-सुख पायो। मन मँह तब चैतन्य दिखायो॥
चिन्तासक्त खम्भ सों बोले। मन अपने के भावहिं खोले॥
तुम्हरे मध्य जो राधा होवै। वेगहिं मोंकूँ दर्शन देवै॥
नयनन चुअहि वहहि जलधारा। नहिं राधे तोहि बिनु निस्तारा॥
ऐसो नहिं कोऊ हितू हमारो। जो संतापहिं करहि निवारो॥
श्रीराधा सन्मुख कब होगो। विरह मोर कब दूरि करेगो॥
पुनि २ विधि सों कहत निहोरी। ताकों मोहि दीजौ भरि झोरी॥
प्रिया हीन काहुहि मति कीजो। और वस्तु कछु थोड़ो दीजो॥

दोहा—अहो देव दुर्लभभयो, सपनेहुँ में बृज देश।
कहँ गोकुल वरषानों, कहि आयो आवेश॥ १०॥
सो०—कहाँ गोपवधू सब, कहँ प्राणेश्वरि कुँवरि।
कहाँ बृज के रास रस, जो स्वप्न में पाऊं नहीं॥

चौ० सपनेहुँ बृज मोहि दीखतु नाहीं। अहो दैव कहाँ हम जाहीं।
सपनेहुँ हैं दुर्लभ सुख सारे। कैसे कहौ काटैं दुःख भारे॥
करत विलाप बीति गई रजनी। कहत न वनहि न सुनतहिंसजनी॥
हरि सबही वैभव के स्वामी। छल सों रोवहिं ज्यों बड़ कामी॥
प्रिया तोहि गल हार बनाऊं। कोऊ कछु कहै न मैं शर्माऊं॥
कब मेरो मन साध पुरै हौ। कब वन-गिरिराजहिं ते ऐहौ॥
विषम दशा भई तब हरि केरो। तन सुधि बुधि नाहीं कछु हेरी॥
भ्रमत २ जहँ जहँ चलि जाहीं। देह गेह की सुधि कछु नाहीं॥

दोह–केलि गृह के मध्य में, मणिमय पिंजर अनूप।
वाके विच एक शुकवर, बैठो रम्य स्वरूप ॥११॥
चोंच रत्न इव सोहती, पंख नील मणि रूप।
कोकिल कंठ समान स्वर, श्री शुकराज अनूप ॥ १२ ॥

चौ० निरखि शुकहिंहरि अचरजु कीन्हों। पुनि विचारु करिकारज चीन्हों॥
लीन्हों शुकहिं हस्त बैठारी। चोंच पंख निज करन सँभारी ॥
मुख चुम्बन करि बोले बानी। अहो सखा मम दशा अयानी ॥
गुप्त कार्य मैं तुम्हहिं बताऊं। तुमसों अपनी विपति नसाऊं ॥
पर उपकार शीश तुम लेहू। वृज में जाइ सुयश अति लेहू ॥
वृज रमणिन कर दुःख मिटावहु। उनको मम संदेश सुनावहु ॥
विरह तप्त जहँ गोपकुमारी। मोर विरह जो होंहि दुःखारी ॥
विरह अग्नि जरीं सब जाईं। तहाँ देहु अमृत वरषाई ॥
तन मन धन अर्पण सबु कीन्हों। सुनियों प्रेम सदा रसभीनों ॥
अहो सखा वेगि वृज जावौ। विरह जरत संदेश सुनावौ ॥
संदेश रूप सुधा लै जावौ। मृतक आत्मन जाय जियावौ ॥
तुम शुक पर उपकारी कहावौ। वृजहिं जाय उपकार दिखावौ ॥
जौ तुम सखा जियत मोहि राखौ। तौ तुम वृजहिं गमन की भाखौ
लै संदेश वृजहिं तुम जावौ। लौटि वेगि तुम मोढिग आवौ ॥
वृजहिं गमन को मार्ग बताऊं। हे शुक जल फल पान कराऊं ॥
रेवत नाम गिरिहिं पर जावौ। वहाँ जाय मधुर फल खावौ ॥
मर्गहिं गोमती सरिता पावौ। पुनि तुम विंदुसरोवर जावौ ॥

Scanned by TapScanner

जहँ कर्दम मुनि आश्रम देखहु । ऋषी भूमि के दर्शन पावहु ॥
पुण्य तीर्थ अवलोकन करहू । कछु विश्राम वहाँ पर करहू ॥
मातहिं जहाँ ज्ञान सिखायो । सो तीरथु अति रम्य सुहायो ॥
पुनि उड़ि जैयो सुदामानगरी । ममकृत सुरपुर हू सों अगरी ॥
यह नगरी मैंने वनवाई । रम्य रुचिर रचना करवाई ॥
लीजो तहउँ कछुक विश्रामू । पैहौ तहाँ परम सुख सामू ॥
तहाँ हमारो नाम न लीजो । तुरतहिं आगे कौं चलि दीजो ॥
पुनि धरणी धर तीरथ जावौ । एक पलक तुम वहाँ वितावौ ॥
तहँ से संदीपनिपुर जैयो । मोर प्रणाम गुरु सों कहियो ॥
जन्म भए को लाभ उठैयो । हमरे गुरु को दर्शन पैयो ॥
यदुवंशिन के गुरु कहाये । हमहुं तहाँ वह विद्या पाये ॥
वहां से उड़ि तुम पुष्कर जाना । पुष्कर राज के दर्शन पाना ॥

दोहा—शुक वर मग में वहुत ही, कष्ट होयगो तोहि ।
कछु फलफूल अहार करि, मग श्रमु लीजो खोहि ॥१३॥

चौ०समय वादि जब वृजतुम जैहौ । वहां जाय सब पाप नशैहौ ॥
मथुरा मार्ग में जब मन दीहौ । बाम भाग गोवर्धन पैहौ ॥
कोपि इन्द्र जब करी चढ़ाई । गिरि कर धरि वृज लियोबचाई ॥
गोवर्धन मैंने पुजवायो । इन्द्र को मैंनें मान घटायो ॥
जहाँ मानसी गंगा वहहीं । कुसुम सरोवर आदिक अहहीं ॥
जहां अरिष्टासुर मै हन्यो । तहां सरोवर मेरो बन्यो ॥
मोकों पाप लग्यो अति भारो । तहां सरोवर इक विस्तारो ॥

Scanned by TapScanner

निज अँगुली से खोदि निकारो । कृष्ण कुण्ड नहाए निस्तारो ।।
राधा कुण्ड न्हाय सुख लहहू । कछुक काल विश्रामहु करहू ।।
बहुत गुफा गिरिवर में पावौ । दर्शन करि निज पाप मिटावौ ।।
पुनि तुम मथुरा नगरी देखौ । दूरहिं ते अपार सुख लेखौ ।।
तेज पुंज सुरपुर सम सोहै । एहि पटतर त्रिभुवन में कोहै ।।
स्वर्णमयी मथुरा जब दिखिहौ । वहाँ बैठि अति सुक्ख निरखिहौ।।
पुष्प विटप वहाँ नाना भाँती । इन्द्र नील मणि प्रभा दिखाती ।।
बहु प्रकार के महल विशाला । निरखि होहि सुख अधिक रसाला ।।
कंस राज को जहाँ पछारा । मुष्टिचाणूर आदि को मारा ।।
जहाँ मारि यमुना में बहायो । सो विश्राम-घाट कहलायो ।।
कुब्जा सों जहँ मिलन भयो है । रजक को जहाँ प्राण लयो है ।।
दर्जी जहाँ वस्त्र पहिराये । और जहाँ बहु दैत्य नशाये ।।
ता नगरी मैं कुछ दिन रहियो । सुमधुर फल मधुपुरी के खइयो ।।
वहाँ विरमि मोहि भूलि न जाना । मो विरही को मत विसराना ।।
भूतेश्वर के दर्शन करना । मम विनती शुक-भूषण सुनना ।।
जल वाहिनि कालिन्दी बहही । पाप ताप सब मोचित करही ।।
यमुना मम प्रियतमा कहावै । मथुरा की शुषमा दरशावै ।।
कदम विटप रमि भोजन करियो । पंख हिलाय मनहिं सुख भरियो ।।
वहाँ से उड़ि वृन्दावन जाना । घाट अक्रूर के दर्शन पाना ।।
पुनि गवनो वृन्दावन ओरी । जो साक्षात् देह रूप है मोरी ।।
वसुधा पर बहु नगर बसाये । नहिं वृन्दावन समता पाये ।।
ओ सुकराज सुनो मम वानी । वृन्दावन सिंगार की खानी ।।

Scanned by TapScanner

चिन्तहिं हरि अति विरह समानी। विरहदशा नहिं जाय बखानी॥
गद् २ गिरा कंठ रुंधि आयो। प्रेम-रंग प्रति रोम समायो॥
वहति नयन सों अति जलधारा। मोह विवश नहिं वचन उचारा॥
मो प्रिय तोहिं वृन्दावन जानो। योमें झूठ न नेकहु मानो॥
मुनि-मन प्रिय बृन्दावन प्यारा। अनुपम तीन लोक से न्यारा॥

--द्वितीय सर्ग--

दोहा–गई मूर्छा जागे हरि, मोहन चतुर सुजान।
अहो छली छलु करि लई, बृजबालनि-कुलकानि॥१४॥

चौ० सावधान हुइ कही कहानी। गोष्ट कथा सब दीन्ह बखानी॥
सुनहु सुशुक मैं तुम्हहिं बताऊँ। रस श्रंगारक गाइ सुनाऊं॥
बृन्दावन के पुलिनहिं देखहु। रास-केलि को स्थल लेखहु॥
रास-केलि करि जहँ सुख लीन्हों। सो वृन्दावन है रस भीनो॥

दोहा–गोप ललिन के संग हम, कीन्हों रास विलास।
गलभुज बहियाँ मेलिकैं, पूरन की सब आस॥१५॥
रास-केलि बहु विधि करी, चरणमृत दियो स्वाद।
जन्म-अरणी उनको भयो, कहा करुं अपवाद॥१६॥

Scanned by TapScanner

उन्हें हमें अन्तर नहीं, जानत वेद पुरान।
उन पर दीन्हों वारि सबु, लोक लाज कुलकानि ॥१७॥

चौ० जमुना पुलिन विलोकहु जाई। पुनि बंशीवट रहौ लुभाई ॥
जहँ बंशी मैं मधुर बजाई। राधा सब गोपिन संग आई ॥
पुनि तुम गोपेश्वर को जाना। इनहूँ रास देखि सुख माना ॥
बृन्दा देवीदर्शन कीजो। बासों प्रेम-कलह सिख लीजो ॥
फिरि उड़ि निधि-वन बैठौ जाई। तहाँ मधुरफल खावहु जाई ॥
केशी तीरथ है बड़ भारी। जहँ केशी हम दियो पछारी ॥
कालीदह के दर्शन कीजो। फिरि वहाँ से आगे चलि दीजो ॥
हे शुक रैनि में करहु निवासा। लखहु बेल-वन केर विलासा ॥
रमि सौभीर ऋषी स्थाना। वहाँ निरखि फिर करहु पयाना ॥
चीर हरण-थल देखहु प्यारे। बहुलावन कोकिल बन न्यारे ॥
जैयो तुम उपनन्द सहारा। निरखि साधु सुख लेहु अपारा ॥
जहँ मैं लूटि २ दधि खाई। तहँ वरषानो पड़ै दिखाई ॥
तहँ प्यारी को जनम सुहाई। सो मोहि है अतिशय सुखदाई ॥
पुनि उड़ि कर हल गामहिं जाना। तहाँ बैठि मीठे फल खाना ॥
बीचहिं बहु स्थाननि जाऊ। तिन्हहिं निरखि अतिशय सुख पाऊ ॥
मान सरोवर तुम जावहुगे। करि २ भ्रमण सुक्ख पावहुगे ॥
बाम भाग एक बनहिं बताऊं। जाहि देखि मैं बहुत लुभाऊं ॥
शेष-शायी फिरि तुम जावौ। वहाँ जाय मीठे फल खावौ ॥
शैल-इन्द्र पर जब तुम जैहौ। राधेवास देखिसुख पैहौ ॥

Scanned by TapScanner

भानु सरोवर तुम देखौगे । करि २ भ्रमण जहाँ पहूँचौगे ॥
विटप मध्य बैठे तुम रहियो । भली प्रकारहिं पुरी निहरियो ॥
शैलेन्द्र पर वृषभानु महल है । ध्वजा पताका तहाँ लखत है ॥
दण्ड-प्रणाम् पुरी कौं करियो । फिरि शुक तुम आगे कौं चलियो ॥
प्रेम सरोवर फिरि पहुँचौगे । फिरि संकेत-धाम जावौगे ॥
वहाँ संकेत के दर्शन पाना । पुनि तुम नन्दगाँव में जाना ॥
वालस्थली हमारी लखना । वहाँ से उड़ि आगे को जाना ॥
है शुक कदम छाँह सुखदाई । फिरि भाण्डीर पड़त दिखलाई ॥
कालिन्दी करि मज्जन पाना । फिरि आगे को करहु पयाना ॥
तहाँ विलम्ब मती तुम करियो । वहाँ से उड़ि नन्दी-शुर जैयो ॥
नन्दी-शुर एक गिरी कहावै । जहँ मम पितु कर घर दिखलावै ॥
पुत्र भाव सों मोहि खिलावत । बहुलक्ष गऊ जहाँ दुहावत ॥
दुग्ध नदी जह बहत अनवरत । पाप-ताप जहँ तुरतहिं नाशत ॥
मम पितु मातु बहुत तप कीन्हों । तब मोहि पुत्र भाव से लीन्हों ॥
दामा आदि सखन संग खेले । गउअन को वन दीन्हें हेले ॥
मोर मुकुट पहिने वन माला । नन्द गाँव विचरे नन्दलाला ॥
दधि मन्थन गावहिं वृज-गोरी । शुक सुनि जैयो उनको ओरी ॥
पूजा हेतु मिली जहँ प्यारी । रास केलि जहँ रस विस्तारी ॥
पूजी गोपिन की सब आसा । मन भरि कीन्हों रास विलासा ॥
यहाँ अनेक निकुँज कहाहीं । नाना विधि पद चिन्ह दिखाहीं ॥
नमस्कार करि फिरि चलि दीजो । कोरराज आगे सुधि लीजो ॥
पुनि शुक कोकिल वन पहुँचौगे । पूर्व दिशा जावट देखौगे ॥

Scanned by TapScanner

जहँ प्यारी को वास वतायो । ऐसो वेद पुरानन गायो ।।
प्यारी सखियन को वतलाई । चन्द्र महल मोहि चलो लिवाई ।।
नीलजलद सम जहँ हरि आवत । उन्हें देखि मम नयन जुड़ावत ।।
मारग आवत प्राणन प्यारे । हुइ विह्वल उन वचन उचारे ।।
देखहु सुनि बंशी ध्वनि होवै । मेरे द्वारहिं हरि मुख जोवै ।।
चलो चलैं दृग लाभ लहैंगे । रास केलि प्रिय संग करैंगे ।।
बृज ललना सब मोहि लड़ावैं । करि प्रमोद मम मनहिं रिझावैं ।।

दोहा—उन पदरज मोकूँ मिलै, सर पर लेहुँ चढ़ाऊँ ।
अहो भाग्य बृज वनतिन, बार बार बलि जाऊँ ।। १८ ।।
जेहि पद रज मिस वहुतपे, बृहमा सरिस सुजान ।
ऊधवहू बृज प्रेम को, कहत रहत गुण गान ।। १९ ।।

चौ० उन गोपिन के दूत ह्वै जाबौ । इतनो यश तुम सर पर लाबौ ।।
सुरनर मुनि सब अस्तुति गावैं । शेष शारदा विनय सुनावैं ।।
मम नगरी कौं करहु प्रणामा । हे शुक हो तुम पूरण कामा ।।
बृज में जाय महारस देखौ । बृज रमणिन अँखियन जल लेखौ ।।
विरह-तपत रमणिन पावहुगे । पुनि तुम करुणा वचन सुनहुगे ।।
विरह विथा होगी बजनारी । विरह तपन में तपति विचारी ।।
स्वप्न तुल्य सुख उनको भयो । लौटि कैं श्याम न दर्शनु दयो ।।
तब मधुपुरी सों कियो पयाना । हम दुःख पावत हैं विधि नाना ।।
आप गये प्राणहु लै गये । तासों अति दुःख दारुण भये ।।
सुक्ख विलास वे आज कहाँ हैं । बृज में तड़पि रहीं अबला हैं ।।

Scanned by TapScanner

तीव्र वेदना सही न जावै । नीलकमल बिनु प्राण गमावैं ॥
दूसरि सखी कहै समुझाई । क्यों तुममैं ऐसी बुधि आई ॥
कबहुँ तौ हरि बृज में फिरि ऐहैं । कहि २ सत्य वचन समुझैहैं ॥
नव धन सम हैं वे नटनागर । हैं वे परम दया के सागर ॥
बोले राधे सों मुसुकाई । अहो सखी सच कहति सिहाई ॥
मोद आस अब ब्रज महँ नाहीं । छाँड़ि कैं गये द्वारिका माहीं ॥
उन हरि दुःख सागर में डाली । हरि कितने कपटी हैं आली ॥
मिलन दिवस अब हे सखि नाहीं । कहा कहउँ अब सखी तो पाहीं ॥
दूतहु भेजि न खबरि मँगाई । भूलि गये वे कुमर कन्हाई ॥
हा सुनिहौं कब बंशी प्यारी । हा २ करुणा सिन्धु बिहारी ॥
मेरी करुणा अवशि सुनैंगे । कहहु सखी कब बृज आवहिंगे ॥
प्राण बिना हम कैसे चलैंगी । भारी दुःख में हाय मरैंगी ॥
मम हित लागि तज्यो पितु-माता । हिम अरु ग्रीष्म सही बरषाता ॥
पती पुत्र कर नाम न जानैं । केवल मोसों नातो मानैं ॥
मेरे प्रेम में छकीं हैं प्यारीं । विरह बावरी भईं हमारीं ॥
कोटि दुःख वे तृण सम जानैं । मम दुःख मेरु तुल्य करि मानैं ॥
मोहि कोई राधा नाम सुनावै । मोहि तबहि असीम सुख आवै ॥
कोउ न सकै कहि सुन्दरताई । हे शुक कहूँ कैसे मैं गाई ॥
राधा केश त्रिवेनी से सोहैं । बिच २ रुचिर माँग मन मोहैं ॥
तेहि मुख चन्दा लखि शर्मावै । दूरहि से लजाइ भजि जावै ॥
राधा सम कोई भई न होई । तीनहुँ लोक भुवन में कोई ॥
लक्ष्मी हू जब दर्शन कीन्हें । रूप चिन्ह अपने नहिं चीन्हें ॥

Scanned by TapScanner

दुःखित होय तप करति विचारी। राधा सम स्वरूप करतारी ।।
तबहीं विधि यों रहे सुनाई। दूसरि नारि न ग्रौर बनाई ।।
केवल राधे की छवि छाई। ऐसी विधि ने बात सुनाई ।।

दोहा—ललिता व विशाखा सखी, चित्रा सुदेवी वाल।
इन्दु तुंगविद्या रँग, चंपकलता विहाल ।।२०।।

मुख्य सखीं जे सोलह रहीं। यूथ २ सखीं बृज में वसहीं ।।
प्रिया चन्द्रमुख गयो सुखाई । राहु ग्रस्यो मम विरह जो ग्राई ।।
जैसे तैसे समय बितावैं। कमल कली सम ते मुरझावैं ।।
श्रावण सम ये नयना बरषैं। विरह-ज्वाल दर्शन को तरसैं ।।
पुष्प सेज पै सखी सुलावैं। सोइ शूल मम ग्रंग चुभावैं ।।
ले गुलाब जल श्रीमुख छिड़कैं। दुःखित ग्रली सब प्रियमुखनिरखैं ।।
चन्दन शीत ज्वाल सम लागै। श्री के ग्रंगहिं सो दुःख पागै ।।
एक २ क्षण युग सम बीतत। चाँद की किरन ग्रगिन ह्वै छेदत ।।
भोग मृत्यु सम देत दिखाई। कहि न जाइ राधे विकलाई ।।
सुख ग्रब बहुत दूर को भागे। ग्रब दुःख ही दुःख में हम पागे ।।

दोहा—चेष्टा हीन मलीन तनु, मूर्छित हैं बृजवाल।
स्वप्नहिं हमहिं निहारतीं, रास-केलि रस ख्याल ।।२१।।

चौ० मेरो नाम लेत उठि बोलैं। ग्रपने मन के भावन खोलैं ।।
हे शुक कृष्ण २ तुम कहियो। नाम सुनाइ मूर्छा जगैयो ।।
शीघ्र वे राधे उठि बैठैंगी । तब हंसि के तुमसों बोलैंगीं ।।
निर्भय हस्त कमल पर बैठौ। शनैः २ राधे सन भेंटो ।।

Scanned by TapScanner

सुनहु संदेश श्री हरि केरो। तुम मति जानहु उन मुख फेरो ॥
राज्य वैभव उन्हहिं न सुहावै। रत्न जटित द्वारिका न भावै ॥
देव मनुज तहँ मान बढ़ावैं। उन्हें तौ बृज की गलो ही भावैं ॥
सोलह सहस आठ पटरानी। सब तजि बोलैं राधे रानी ॥
दूत बनाय राधिका नाथा। भेजौ मोहि सुनावहुँ गाथा ॥
उन हरि दशा कही ना जाई। जिमि पन्नग मणि विनु अकुलाई ॥
भाग्य बृक्ष अब गयो सुखाई। हृदय विदीर्ण होइ दुःख दाई ॥
धैर्य कवच अब टूटि गयो है। काम-क्रीड़ास्थल भेदि रह्यो है ॥
हे प्रिये वेगि ही दर्शन दीजो। पाछे मन आवहि सो कीजो ॥
क्षण २ कोटि कल्प सम जावै। विरह ज्वाल मम हियो जलावै ॥
डूबत तव दुःख सागर माहीं। माँझी बिनु जिमि नाव नशाहीं ॥
स्वांति बूंद सम भयो मनु मेरो। प्रिया कृपा कटाक्षन हेरो ॥
ऐसो दिन प्यारी कब पाऊं। तुम सँग यमुना पुलिनन जाऊं ॥
कब पूजै विधि मेरी आशा। कब तो सँग मैं करहुँ विलासा ॥
राधे हरि जल्दी ही ऐहैं। सबही मन की तपनि वुझैहैं ॥
दै आश्वासन वहाँ से उड़ना। जाके पिता भवन यों कहना ॥
मैय्या अक्रूरहिं गाली देती। सदा दुःख दारुण सहि लेती ॥
स्वप्न माँहि मम लीला देखति। सदा रहति मेरो मगु हेरति ॥
जगाये हू वह नहिं जगेगी। मूर्छित ह्वै वह दुःख सहेगी ॥
ज्ञान शून्य माता कौं लखना। पुनि तुम दुःखित पिताहि निरखना ॥
लै मम नाम चरण पड़ि जैयो। मम प्रणाम उनसों तुम कहियो ॥
शीघ्रहि मैं अब बृज में आऊं। तबहिं तुम्हारी आज्ञा उठाऊं ॥

बहुत दूरि बाबा मैं आयो । विधि ने कर्म्म चक्र भरमायो ।।
कछु सेवा मैं करन न पायो । विधि मोहि विछुरन ही करवायो ।।
दै अश्वासन मातु पिता को । पुनि जाना तुम गोष्ट सभाको ।।
मो सम मोर पुच्छ वे बाँधत । शक्ति विलक्षण ते दिखलावत ।।
वेणु बजावत गौए चुंगावत । वे जन गोप सखा कहिलावत ।।

दोहा–दामा सुबल अर्जुन सखा, जे खेले मो संग ।
नाचत गावत गोप सँग, करत बहुत रस रंग ।।२२।।
हे शुक बहुरि प्रणाम करि, लीजो सबन निहार ।
गोप ग्वाल संग बात करि, तुम ह्वै जाउ निहाल ।।२३।।

चौ० गोपिन सों संदेशो कहियो । जनि अपने मन में दुःखपइयो ।।
पुनि मैं निश्चय वृज में आऊँ । मधुर २ कहि बात सुनाऊँ ।।
तीव्र वेदना गोपी जलतीं । मानो जलीं भुनीं सीं फिरतीं ।।
प्रथम जाय बृज में यह करियो । करि प्रणाम बृज में घुस जैयो ।।
करि कीर्तन पशु पक्षिन सुनैयो । लता पतन पै हाथ फिरैयो ।।
हरि के वचन धारि उर लीन्हों । करि प्रणाम गमन बृज कीन्हों ।।

दोहा–एक टक दृष्टि सों हेरत, ओझल भयो शुकराज ।
खिन्न चित्त ह्वै द्वार पै, निरखत राज समाज ।।२४।।

चौ० दारुक सारथी वेगि बुलाए । रथहिं साजि द्वार पै लाये ।।
मोहन चरण रसिक मन भाए । सब मिलि जय जय कार सुनाए ।।

—तृतीय सर्ग—

हरि के वचन शूक सिरधारी। दूरि देश को गमन विचारी ॥
नाम धाम सब को करि ध्याना। हर्ष पूर्वक कियो पयाना ॥
नाना विधि गिरि देखत भयऊ। और तीर्थ जे २ हरि कहेऊ ॥
तिन सब में बड़ आनँद लीन्हा। उन सबकौं तब दर्शन कीन्हा ॥
तब हरि बृज के दर्शन कीन्हें। लीला थल उनहीं सब चीन्हें ॥
रवि तनया देखो हरषाई। चोंचि बोरि जल पियो अघाई ॥
विरह-जनित दुःख अनुभव करिकैं। प्रिया मिलन चले शोकितहुइकैं ॥
राधा दुःख कहा नहिं जावै। दिन द्वै रात चौगुनो आवै ॥
सखियाँ चन्दन दाह निवारैं। बहुत यतन करि ताहि सँभारैं ॥

दोहा—कीर बैठि कैं लतन पै, बोलै मधुरे बोल।
चकित भईं सुनि सबही, बृज की नारि अडोल ॥२५॥

चौ० शुक तबहीं निज बोल सुनायो। भाग्य सूर्य्य उदय हुइ आयो॥
मोरे हात सँदेशो दीन्हों। बहुरि प्रेम श्री हरि को चीन्हों ॥
सखियन सुनी शूक की बानी। रोम २ प्रमुदित हर्षानी ॥
राधा पुनि २ शुकहिं बुलावै। करि सँकेत निज हाथ हिलावैं ॥
करि प्रणाम् सखिन समेती। शुक बैठो तब प्रिया निकेती ॥
कहेउ प्रेम युत शुकहिं सुनाई। हे शुक हरि को कहहु भलाई ॥
कछुक सँदेशो हरि को कहियो। हमरे जिय की तपनि बुझैयो ॥

दोहा—कीर न्हाय जलपान करि, मग के श्रमहिं मिटाइ।
कहन लगे हरि की कथा, सकल प्रसंग सुनाइ ॥२६॥

सुनि राधा चित लाइ के, हरि कर कथा प्रसंग।
कंस मारि द्वारावति, गयेउसहित रसरंग ॥२७॥

बहुत विवाह किए हरि, भोगत राज विलास।
यश फैलो त्रैलोक में, वैभव चढ़ो अकाश ॥२८॥

चौ० पुनि राधा कर बैठौ जाई। कछु प्रसंग यों लगो सुनाई॥
तुमहूँ तें हरि को दुःख दूना। कहा कहूँ कछु कहत बनैंना॥
विरह जरत वे कछु न सुहावै। अन्न त्यागि पानीहु न भावै॥
करि अचरज कह राधा रानी। बात न मेरे मनहिं समानी॥

दोहा–बन्धु वर्ग और राज मद, राज कुमारिन संग।
ऐसे हू रस रंग में, भओ कैसे मन भंग ॥२९॥

चौ० का वृज वासितु लज्जा आवत। कहौ कीर वे तहँ किमि रहबत॥
कीर राज बावरे भये हौ। झूँठे वचन अलापि रहे हौ॥
हरिहिं जो ऐसो वियोग भयो है। फिर क्यों वृज नहि आवन भयोहै॥
कीर राज बोलो यों बानी। तुम जो कही सत्य हम मानी॥
पपीहा पड़ो रहत जल माहीं। भूलेहु चोंचि न बोलत ताहीं॥
स्वाँति बूँद आशा उपजाई। ऐसी अवस्था भई हरि राई॥
ऐसो ही भाव भयो हरि केरो। मैं तो अपनी आँखिन हेरो॥
भौंरा पुष्प तजहि ज्यों नाहीं। रवि उदोत लगि मरै वा ठाहीं॥
कियो अनुराग छोड़ो ना जावै। फिर सिर धुनि २ के पछितावै॥
दैवाधीन द्वारिका माहीं। अहै दोष हरि को कछु नाहीं॥

कपट पढ़ाई गुरु सन सीखी । हम तौ भईं दूध की माँखी ।
ब्रज क्वाँरिन की लाज छुड़ाई । अब तो हुइ रही लोग हँसाई ।
या सों अधिक विपति कब आवै । अहो तड़पि तनु प्राणगँवावै ।
अतिहिं निठुर वे कुमर कन्हाई । हम अबलन पै दया न आई ।
हैं छलछन्द नन्द को नन्दन । बहुतक डारे प्रेम के फंदन ।
कठिन बचन बोलहु मति प्यारी । तुम उन प्राण बल्लभा न्यारी ।

दोहा—शपथ खाय मैं कहतु अब, बिलग न तुमहिं गोपाल ।
तुम्हरे विरह सागर मँह विकल रहत गोपाल ॥३०॥

प्रथम व्याधि अनुराग बुलावत । पाछे मारि नसहि नस वेधत ॥
ऐसे हो श्याम नयन तकि मारे । मर्म स्थल सब भेदे हमारे ॥
आज वे दुःख भंजन प्रभु कहाँ । शुक बोलो मै जाउँ वहाँ ॥
अब उनकी दयालुता कहाँ है । ऐसी उल्टी बात यहाँ है ॥
क्यों नहिं दर्श सुधा वरषावें । हम रमणिन को आय जियावें ॥
दुःखित हृदय कछु दूषण नाहीं । सठौ बात कहिओ हरि पाहीं ॥
दावानल से मोहि बचायो । क्यों अब विरह से खूब जलायो ॥
क्यों नहिं सुन्दर दर्श दिखावत। बृजभूषण हरि क्यों नहिं आवत॥
कृष्ण मधुपुरी गये दुःख नाईं । प्रेम पाठ क्यों गये पढ़ाई ॥
क्यों मोहन ने रास रचायो । वंशी फूँकि क्यों हमें बुलायो ॥
क्यों हरि कियो प्रेम अतिभारी । क्यों गल में गलबहियाँ डारी ॥
अधरामृत को स्वाद चखायो । क्यों वृज-वन में हमहिं बुलायो ॥
हमहि न क्यों हरि गये लिवाई । नवनीत सम वे हृदय कहाई ॥
प्रेम-वृष्टि हरि वृज में कीन्हीं । अब एहि दिशा दृष्टि नहिं दीन्हीं॥

कीर विधाता साक्षी देंगे । दोष पाप चित्रगुप्त लिखेंगे ।।
कृष्ण रंग काले सों सोहत । सोई काले को गुण वर्णत ।।
काले काग कोयल घर पालत । बड़े भए कुल अपनेहिं धावत ।।
ऐसे ही समझो नन्द के नन्दन । कौन सुने हमरो दुःख क्रन्दन ।।
धीमर कालो जाल बिछावत । सब मछरिन को पकरि के लावत ।।
करि कठोरता प्राण निकारत । वाके हृदय दया नहिं आवत ।।
वधिकन केरो राग सुनावत । सब हरिणन को तहां बुलावत ।।
बहुरि बाण वेधत उनके तन । देखो कैसा कठिन नीच पन ।।
तैसेहि हरि ने कुदशा कीन्हीं । बृजबालन के प्राण हरि लीन्हीं ।।
अक्रूर आय कठिन पन ठानो । बृज में आय के विष वरषानो ।।
दुःखी कहै जो अनुचित बानी । पडित बाको दोष न मानी ।।
ऐसेहि कीर मो अबलन जानो । भलो बुरो जो कहूँ न मानो ।।
शुकराज यों बोले बानी । तुम सर्वज्ञ कृष्ण मति मानी ।।
किमि एहि कौं वियोग बतलावत । राधे क्यों न साफ समझावत ।।
रह्यो न धैर्य राधे बिलखानो । जिमि सावन भादों बरषानो ।।
हृदय पलटि दियो बिरह जगाई । तासों प्रेम बेलि अधिकाई ।।
निपट निरमोही के पाले पड़ी हूँ । विरह ताप अब भोगि रही हूँ ।।

दोहा–निर्मल नीर जमुन तजि, पीवत खारो नीर ।
हे बेपीर पीर नहिं आखिर जाति अहीर ।।३१।।
विषम विरह की वेदना, बिधो सकल तन मोर ।
शूक विथा कासे कहूँ, लगी प्रेम की डोर ।३२।।

Scanned by TapScanner

अब यह तनु चलिबो चहत, वेगहिं सुर पुर धाम।
विषम बाण वेधो हियो, आखिर कोमल वाम ॥२३॥

चौ० कीर वचन कहु कब हरि आवें। विरह वेदना बहुत सतावें॥
कमल नयन सुधि लेहु हमारी। बिरह समुद्र से लेहु उबारी॥
कर गहि नाथ उबारहु मोई। अब तो लोक लाज सब खोई॥
अस कहि तुरतहि मूर्छा आई। कहे वचन शुकराज सुनाई॥
हे राधे तुम धन्य कहाई। तुम सम कोउ नहिं देत दिखाई॥
त्रिलोक नाथ के हृदय विराजो। सौभाग्यवती उनके नयनन राजो॥
पुनि २ मैं तुम्हें करहुँ प्रणामा। अस सौभाग्य न कोऊ वामा॥
धन्य २ तुम धन्य भई हो। तुम सम प्रिया न और कहीं हो॥
हरि स्वप्न में तुम्हहिं निहारें। आलिङ्गन करि विरह निवारें॥
इतने में जाग्रत हुइ जावें। हाय २ करि रुदन मचावें॥
हरि को दुःख तुम्ह हूँ सों दूना। विरह विथा कछु कहत बनैना॥
तोर विरह हत वपु हरि केरो। मैं हू अपने नयनन हेरो॥
पर विहीन खग सम गति हरि की। मणि विहीन जिमि काहू ब्यालकी॥
प्रति दिन हरि वृज चलन विचारत। क्षीण हीनते आन न पावत॥
निशि में तुम्हरो ध्यान लगावें। दिन हू राधे २ गावें॥
चित्त सों तुम्हरे पास कन्हाई। प्रेम तार अब दियो लगाई॥

दोहा—चन्दा रहहि आकाश में, कुमुद बसहिं जल माँहि।
तबहू अपने भाव सों, सहजहिं प्रीति निबाहिं॥२४॥

जासों अतिशय प्रीति हो, नियरो बसै कि दूर।

चित्त रहै तेहि पास ही, यह जानों भरपूर ॥३५॥

चौ० दुःख सुख दोउ सहोदर भ्राता। समय पाइ के आवत जाता ॥
ज्ञानी दुःख ज्ञान सों काटैं। अज्ञानी अज्ञान में बाँटै ॥
विनु दुःख सुख इमि रहइ न कोई। यह प्रसंग जानहिं सबु कोई ॥
विनु वियोग संयोग न आवै। विनु संयोग वियोग न पावै ॥
अब तो हरि शीघ्र वृज आवैं। तोर विरह की ताप नशावैं ॥
मेरे प्रण कौं सांचो जानौ। हरि दर्शनु कराइ मैं मानौ ॥
शपथ खाइ कहूँ बृज गोरी। श्यामहिं वेगि लाउँ बृज ओरी ॥

दोहा–हरि सों कहियो, जाइ शुक एक हमारी बात।

जो ऐसो करनो हतो, क्यों किए बहु उत्पात ॥३६॥

दोहा–शुकहिं बहुत सन्मानि के, आनन्द ढोल बजाइ।

बलि जाऊँ शुक आपकी, श्यामहिं लाउ लिवाइ ॥३७॥

आवन २ कहि हर्षाई। दाड़िम फल निज हाथ खवाई ॥
सबके मुख प्रमुदित हुइ जावैं। आनँद बधाई सखीं बजावैं ॥
आपस में करती आलीङ्गन। नयन चुएँ जल जैसे सावन ॥
पुनि शुक बोलो तुम यों बानी। पिता भवन मोहि भेजो रानी ॥
सुनत वचन एक सखी बुलाई। शशीप्रभा तेहिं नाम कहाई ॥
शुक बृजराज घरहिं लै जावौ। हस्त कमल पं जाइ बिठावौ ॥
हाथ राखि पहुँची नन्द द्वारे। माता सौं यों बचन उचारे ॥
तुम्हरो पुत्र-सँदेशो लायो। यह शुकराज द्वारिका सों आयो ॥

कछु चैतन्य ह्वै कहियो कहाँ है। कहहु सखी अब भयौ कहा है ॥
नयनन बहन लगी जलधारा । व्याकुल ह्वै तब वचन उचारा ॥
ह्वै तब विकल कहति यों माई । मम सुत दूत न परत दिखाई ॥
ऐसे प्रेम में शुक लखि आवा । हरि गुन-श्रवन को बाढ़ो चावा ॥
शुक तब लियो हाथ बैठारी । शशिप्रभा तब कहति पुकारी ॥
यह शुक द्वारावति सों आयो । तोर पुत्र करि कृपा पठायो ॥
कहो शुक सुत द्वारिका मझारी । सुखी रहै मम सुरति बिसारी ॥
परम हर्ष सम्मानित कीन्हों । शुक संदेश कह्यो रस भीनो ॥
नित उठि तात मात सुधि करही । नैननु सों जल निशि दिन झरही ॥
मातु पिता दुःख दुःखित कन्हाई । राजैश्वर्य न उन्हें सुहाई ॥
तब माता यों बोली बानी । सुनहु शुक मम बात पुरानी ॥
माई बिना को लाड़ लड़ावै । रुचिर भोज को ताहि करावै ॥
बाकी प्रकृति कोई न पहिचाने । तेहि अनकूल बात को जाने ॥
मेरे सुत को माखन भावे । बाकों और न कछु रुचि लावे ॥
भोर होत हरि माखन माँगत । आपु खात अरु सखन खिलावत ॥
बृज थल मच्यो माखन को कांधौं । होइ कीच ज्यों सावन भादौं ॥
बृज गोपिन घर माखन खायो । सोहू उन वनितनि अति भायो ॥
मातु पिता बृज बन्धुन भलो । तासों मोहि लगत अति हौलो ॥
आते श्याम धायके नाते । विरह अगिन तब नाहिं जराते ॥
विवश भई अब कहा करूँगी । बिधना लिखा सो भोगि मरूँगी ॥
परवश हूँ कछु वश ना मेरो । ब्रज की दशा नयन सों हेरो ॥
एकहि पूत कोखि सों जायो । सोउ पूत ह्वै गयो परायो ॥

भई कठोर वज्र सी छाती । सुत बिछोह में फटि नहिं जाती ।।

दोहा–कहा करूँ बिधि दियो, दुःख कर्म लिखे की रेख ।

वज्र पात क्यों ना भयो, सुत बिछुरन को देख ।।३८।।

अति कठोर नन्दिनि सुत भयऊ । मम सुत दूरि देश में गयेऊ ।।

राति दिना मैं कोसत वाकों । पल्टो लियो जानें कौन जन्मको ।।

विरह दुःखित गउअन कौं देखौ । कौन करै गोपन को लेखो ।।

तृण नहीं खाँइ न जल वे पीवैं । केवल कृष्ण दर्श लगि जीवैं ।।

नख पर गिरि धरि लियो उपारो।वृज जन पर अस कृपा विचारी।।

आजु बिलखि दारुण दुःख धावत । निठुर कृष्ण कबहूँ नहिं आवत।।

शुक सुनियो यह प्रेम कहानी । धीरज धार्यो मन में आनी ।।

अहो शुक मैं हीरा चबूँगी । मैं कहूँ विष खाइ मरूँगी ।।

कृष्ण मिलन की आस में जीवौं । नाहिं तौ घोरि हलाहल पीवौं ।।

अब ऐहैं बिलम्ब कछु नाहीं । क्यों माता इतनी अकुलाहीं ।।

पहिले हमको हरि ने भेजो । कहियो मम आवन को संदेशो ।।

क्यों मात विष खाइ मरोगी । तुम तो सुत के दर्श करोगी ।।

वृज बासिन सुन्यो शुक एक आयो । लेन खबरि बृज राज पठायो ।।

सुवल सखा आदिक जुरि आये । अरु माता के आँगन धाये ।।

शुकहिं देखि अति अचरज भयऊ । हर्षोल्लास उपजि मनगयऊ ।।

कहउ कुशल मम मित्तर केरी । मिलनन न आये लगाई देरी ।।

यादब सहित बे कुशल कन्हाई । कहो सखा उन केरि भलाई ।।

कब हुंक सुरत करत वृज केरी । हम सखन की कबहुं सुधि हेरी ।।

सब गोप और गोपी प्यासी । आई मिलन सब श्याम उपासी ।।

कही शुक अमिय सनी मृदु बानी । सुनहु वृजवासी श्याम कहानी ॥

दोहा—कंस मारि असुर हनि, अरि बहु जीति विशेष।
सबहीं पर निज विजय करि, बसत द्वारिका देश ॥३९॥

चौ० सबही गुण सम्पन्न कन्हाई । बहुतहि हू वे व्याह रचाई ॥
वृज बासिन सुधि करि दुःखपावैं । बहुत कहैं वे रुदन मचावैं ॥
हमको भेजो दूत बनाई । कछू संदेशो दियो पठाई ॥
शुक कौं उत्तर दियो वृज वासी । सुनहु शुक तुम सब गुण राशी ॥
कृष्ण बिना व्रज सुनौ लागत । हमको बहु तहि विरह सतावत ॥
पहिले दावानल सों बचायो । अब तो विरह ज्वाल पजरायो ॥
पुण्य भृष्ट भए दुःख पावें । काहे कृष्ण को दोष लगावें ॥
निज कृत कर्म्मन को दुःख भुगतत । तासों विरहानल में सुलगत
ऐश्वर्य पाय हैं भूले कन्हाई । सो आवन में देर लगाई ॥
करि २ बात चरित हरि केरी । नयना बरषत ज्यों पिचकारी ॥
गोपन सुख भयो मिटो विषादा । निश्चयही आवें गोकुल चांदा ॥

दोहा—थल जल नभ चर जीव जे, पायो पूर्ण संदेश ।
व्रज में सबको हर्ष अति, दर्शन इच्छा शेष ॥४०॥
शुक संदेशो श्रवन करि, पूर्ण भई अभिलाष ।
जल्दी ही शुक मेटियो, कृष्न दर्श की प्यास ॥४१॥
आनन्द मग्न गोहिनी प्रभु तुम चरनन लागि दौर।
प्रमुदित वृज में वास हित, हमहिं देहु कछु ठौर ॥४२॥

Scanned by TapScanner

श्री वैष्ठाव जन बंदित, रसिकन आनँद पंथ ।
नन्दकिशोर कृत काव्य यह, मोहिनी भाषित ग्रन्थ ॥४३॥
वहुत मनोहर ग्रन्थ यह, शुकदूत याको नाम ।
विरह विथा में रचित यह, रस श्रृंगार ललाम ॥४४॥

चौ०सुख पूर्वक कछु दिन करि वासा । द्वारिका चलन शूक अभिलाषा
वृज वासिन सों आज्ञा लीन्हीं । विरह दशा निज नयनन चीन्हीं ॥
कछू जतनु करि श्याम मिलैयो । द्वारिकानाथहिं वृज लै भइयो ॥
द्वारिका चलत पर कांपन लागै । विरह देखि प्रेमरस पागे ॥
जवहिं तलक शुद्ध परयो दिखाई । राधे देखि २ हर्षाई ॥ देखि
नयनन ओट भयो शुक राई । सखिन सहित राधे मूर्छाखाई ॥
उड़ि इमि सुआ भ्रमण तहँ कीन्हों । पुनि द्वारिका पंथ चलि दीन्हों
मार्ग चलत देरवहु लागी । हरि को विरह वेदना जागी ॥
अहो शूक अजहूँ नहिं आयो । जानें कौन वाहि भ्रमायो ॥
पशू योनि वह पक्षीराई । सो भेजो हम दूत वनाई ॥
चिन्ता मग्न द्वारिका नाथा । कौन सुनावहि विरहा गाथा ॥
प्राणन प्यारो वृज है हमारो । सोउभयो नयनन सों न्यारो ॥

दोहा—अमिय समान छुटो जल, खारी सागर नीर ।
हा विधि ने कैसी रची, ऐसी वुरी तक़दीर ॥४५॥
हा विधि निर्मोही भयो, क्या लिखि दियो लिलार ।
नन्द जसोदा मातु-पितु, राधा सम छुटी नारि ॥४६॥

ग्वाल वाल वृज रस छुटयो, किन संग करूँ किलोर।
स्वर्ण मयी ये द्वारिका, वृज में कई करोर ॥४७॥
दुःख मोचन सोचत हरि, दारिद्र हृदय की बात।
मेरो तौ कोऊ हितू नहिं, यह कहि २ अकुलात ॥४८॥
दूत विना व्याकुल अति, क्षण २ मूर्छा खात।
विरह विथा में मग्न तनु, चिन्ता-सिन्धु समात ॥४९॥
सो० चिन्ता सिन्धु समाहिं, शुक आयो नहिं दिन गये।
पकरी हरि की बाँह, पोत सरिस आयो शुक ॥५०॥
चौ०शुभ सूचक दाहिनों अंग फरके। औरहु वहुत शगुन शुभ दीखें॥
पूर्छग्रह वसुदेव समेती। बैठे हरि दुःखी, पिता निकेती॥
कृष तनु केश जटा की वेनी। जारति हृदय विरह दुःख देनी॥
पंथ निहारत हैं शुक केरो। दूरहिं ते उन शुकहिं निहारो॥
आजु भयो हर्ष अति भारो। हस्त कमल लै हृदय धारो॥
कहा देउँ पलटे के माँही। या संदेश सरिस कछु नाहीं॥
तात! कछुक वृज-चरित सुनावहु। आदर कियो कि नाहिं वतावहु॥
मोहि तड़पत दिन रात विहानी। कहहु तात वृज केरि कहानी॥
पावहि मरणासन्न पियूषा। इमि पूजी तुम मेरी आशा॥
एते दिन तुम कहाँ विताये। ओ शुक! तुम विलम्ब से आए॥
दोहा--विरह उदधि वूड़त भयो, तात भयो जल प्रान।
वृज-संदेशो लाय के, उवारे मोरे प्रान ॥५१॥

चौ०तात मातु की कहो कहानी । श्री राधा तुम्हें देखि सिहानी ।।
गोप-गोपिन की कथा सुनावो । वृज जीवन की दशा वतावो ।।
प्राण प्रिया तनु राखो कि नाहीं । सवही चरित कहो मो पाहीं ।।
ह्वै रोमांच शुक बोलत भयऊ । वा वृज-दशा मैं कहा सुनाऊँ ।।
लता पता हू सूखि गयी हैं । गोवछरा मुरझाय रहें हैं ।।

दोहा–मानोइन्द्र ने वज्र लै, ध्वंस कियो वृज देश ।
पिछलो वैरु नि कारि लयो, अब न रहो कछु शेष ।।५२।।

चौ० वृज पक्षिन छोड़यो जलपाना । नयन मूँदि बैठे तव ध्याना ।।
गोकुल तहँ तिनुका ना तोड़े । बैठि मौन जग से मुख मोड़े ।।
रहैं ध्यान मगन वृजवासी । नैनन नीर ढरै दिन राती ।।
तेज हीन भये सब वृजवासी । जप तप करत महान उदासी ।।
सुनहु नाथ राधे की करनी । सो मो पै तो जाय न वरनी ।।
छः ऋतु उन सेवा कीन्हीं । नयनन वर्षा ऋतु लै लीन्हीं ।।
श्वांसहि तेहि ने शरद ऋतु पाई । पलकन पै हेमन्त सुहाई ।।
बुद्धि मैं ऋतु हें शिशिर समाइ । वसंत सखी वनि चदंन लाई ।।
मती ग्रीष्म ऋतु सों अति भरी । ऐसेहि छः ऋतु सेवन करी ।।
प्रिय मिलन की आशावाढ़ी । लौ लगाइ राधे भइ ठाढ़ी ।।
वहुरि नाहिं तुम वृज में जावो । तुम विनु राधे प्राण गंमावो ।।

दोदा–मोहिनी मानस पटल पर, हरि ने कीन्हों वास ।
मेरे मन प्रभु दरश की, वाढ़ी अधिकै प्यास ।।५३।।

चौ० शुक मिलन प्रसंग गाय सुनायो । तोसरो सर्ग है पूरन पायो ।।

Scanned by TapScanner

शुक दूत नाम काव्य सुख राशी । चित्तवृत्ति को परम हुलासो ।।
नन्द किशोर कर काव्य ये बंदित । मोहिनी ने है कियो प्रकाशित ।।

--चतुर्थ सर्ग--

दोहा–नाथ वेगि चलिए बृजहिं, भस्म होत नहिं नेह ।
बृज में रहियो कछुक दिन, राधाजी के गेह ।।५४।।

चौ० शुक मुख नम्र वचन सुनि लीन्हें। हरि के अश्रु पोंछि शुकदीन्हे।।
बृज लीला सब दृष्टि में आई । हरि मन तब बृज चलन समाई।।
हे शुक कुल भूषन सुखदाई ! कहौ शूक कहा करूँ उपाई ।।
तब शुक कहत विचार विचारी ।तुम बिन बृज नहि होहि सुखारी।।
तासों मृतक आत्मन जिआओ । मैं प्रन करि यह बृज सों आयो ।।
मम प्रन पूरन करहु मुरारी । पाछे मन की करहु सुखारी ।।
मेरे चलत द्वारिका नशावे । घिरि २ शत्रु द्वारिका आवे ।।
तेहि अवसर ऊधवजी आए । निरखि शुकहिं बहु अचरज पाए ।।
करि प्रनाम यों बोले वचना । कहौ कीर कहँ से आगमना ।।
भाग्यवंत यह पाल के राखो । कहाँ ते शुक आयो यह भाखो ।।
अहो शूक तुम कहा रंगलाये । कै काहू ने दूत पठाये ।।
देखि ऊधवहिं नाहिं छिपायो । समाचार हरि कहि समुझायो ।।
गद्गद गिरा कंठरुंधि आयो । ऊधव यह वृत्तान्त पायो ।।

Scanned by TapScanner

ऊधव अपनो स्वप्न सुनावत। कहि २ के हरि कौं समुझावत ।।
आजु राति मोहि सपनो आयो। सपने तुम मोहि बृजहि पठायो ।।
ब्रज की दशा देखि दुःख पायो। सो हरि तुम्हहिं कहूँ समझायो ।।

दोहा–विटप पेड़ बृज के जरे, रह्योनाहिं कछु तात।
गोप ग्वाल सब दुखित अति, दीनम्लीन कृष गात ।।५५।।

चौ० अति व्याकुल श्री राधे रानी। उनकी दशा न जाइ बखानी ।।
व्रज के ग्वाल बाल अरु बाछी। उनकी दशा बिनु कहे आछी ।।
मातु पिता को दुःख को गावै। हम सों नाहिं कहत बनि आवै ।।
विरह जनित पीड़ाबहु भारी। व्याकुल रहत पिता महतारी ।।
ऐसी दशा देखि दुःख पावा। खुली आँख मन में पछितावा ।।
राज सौंपि बलराम को दीजे। फेरि गमन वृन्दावन कीजे ।।
चित्त भ्रमर नित बृज मँडरावै। तासों हरिहूँहि दुःख सतावै ।।
आज्ञा लेहु बलराम से जाई। व्रजहिं चलन की जो मन आई ।।
मीठी मिश्री घोरि पिआवो। फिरि क्यों उपर से बतलावो ।।
दादा कर आयसु लै आवो। मोकूँ फेरि आय समुझावो ।।
ऊधव राम भवन मग लीन्हों। दाऊ सों बोले रस भीनों ।।
ब्रज को चलन तात ठहराई। तब सम्मति किमि कहौं हे भाई ।।
विदा लेन तुमसों हरि आवैं। जौ तुमरो अनुशासन पावैं ।।
उत्तम बात कही बलरामा। जाइ करहु पुर रक्षा श्यामा ।।

दोहा–लै आज्ञा ऊधव चले, पहुँचे हरि के पास।
ऊधव मुख संदेश सुनि, पूरन हुइ गयी आस ।।५६।।

शुक दूत नाम काव्य सुख राशी । चित्तवृत्ति को परम हुलासो ।।
नन्द किशोर कर काव्य ये बंदित । मोहिनी ने है कियो प्रकाशित।।

--चतुर्थ सर्ग--

दोहा–नाथ वेगि चलिए बृजहिं, भस्म होत नहिं नेह ।
वृज में रहियो कछुक दिन, राधाजी के गेह ।।५४।।

चौ० शुक मुख नम्र वचन सुनि लीन्हें।हरि के अश्रु पोंछि शुकदीन्हे।।
वृज लीला सब दृष्टि में आई । हरि मन तब बृज चलन समाई।।
हे शुक कुल भूषन सुखदाई ! कहो शूक कहा करूँ उपाई ।।
तब शुक कहत विचार विचारी ।तुम बिन बृज नहि होहि सुखारी।।
तासों मृतक आत्मन जिआओ । मैं प्रन करि यह वृज सों आयो ।।
मम प्रन पूरन करहु मुरारी । पाछे मन की करहु सुखारी ।।
मेरे चलत द्वारिका नशावे । घिरि २ शत्रु द्वारिका आवे ।।
तेहि अवसर ऊधवजी आए । निरखि शुकहिं बहु अचरज पाए ।।
करि प्रनाम यों बोले वचना । कहो कीर कहँ से आगमना ।।
भाग्यवंत यह पाल के राखो । कहाँ ते शुक आयो यह भाखो ।।
अहो शूक तुम कहा रंगलाये । कै काहू ने दूत पठाये ।।
देखि ऊधवहिं नाहिं छिपायो । समाचार हरि कहि समुझायो ।।
गद्गद गिरा कंठरुंधि आयो । ऊधव यह वृत्तान्त पायो ।।

Scanned by TapScanner

ऊधव अपनो स्वप्न सुनावत । कहि २ के हरि कौं समुझावत ।।
आजु राति मोहि सपनो आयो । सपने तुम मोहि बृजहि पठायो ।।
ब्रज की दशा देखि दुःख पायो । सो हरि तुम्हहिं कहूँ समझायो ।।

दोहा–विटप पेड़ बृज के जरे, रह्यौनाहिं कछु तात ।
गोप ग्वाल सब दुखित अति, दीनम्लीन कृष गात ।।५५।।

चौ० अति व्याकुल श्री राधे रानी । उनकी दशा न जाइ बखानी ।।
व्रज के ग्वाल बाल अरु बाछी । उनकी दशा बिनु कहे आछी ।।
मातु पिता को दुःख को गावै । हम सों नाहिं कहत बनि आवै ।।
विरह जनित पीड़ाबहु भारी । व्याकुल रहत पिता महतारी ।।
ऐसी दशा देखि दुःख पावा । खुली आँख मन में पछितावा ।।
राज सौंपि बलराम को दीजे । फेरि गमन वृन्दावन कीजे ।।
चित्त भ्रमर नित बृज मँडरावै । तासों हरिहूहिं दुःख सतावै ।।
आज्ञा लेहु बलराम से जाई । व्रजहिं चलन की जो मन आई ।।
मीठी मिश्री घोरि पिआवो । फिरि क्यों उपर से बतलावो ।।
दादा कर आयसु लै आवो । मोकूँ फेरि आय समुझावो ।।
ऊधव राम भवन मग लीन्हों । दाऊ सों बोले रस भीनों ।।
ब्रज को चलन तात ठहराई । तब सम्मति किमि कहौं हे भाई ।।
विदा लेन तुमसों हरि आवैं । जौ तुमरो अनुशासन पावैं ।।
उत्तम बात कही बलरामा । जाइ करहु पुर रक्षा श्यामा ।।

दोहा–लै आज्ञा ऊधव चले, पहुँचे हरि के पास ।
ऊधव मुख संदेश सुनि, पूरन हुइ गयी आस ।।५६।।

Scanned by TapScanner

चौ० पुनि बलराम भवन हरि जाईं । तिन्हहिं प्रणाम करी सिरनाईं ।।
वृजवासिन कौं जाय जियावो । वेगहिं लौटि द्वारिका आवो ।।
मातु पिता सब पूरन कामा । कहियो तिनसों मोर प्रनामा ।
सकल मनोरथ सिद्ध भए हैं । वृजहिं चलन चित-चाहवढ़े है ।।
वे हरि हैं घर २ के वासी । तासों वात सवहिं मन भ्यासी ।।
पंडित सों सायत छँटवायो । भोजनादि सामान मँगाई ।।
ठाठ राजसी कीन्हें न्यारे । बृजहिं गमन के ठाठ सँवारे ।।
बृज माधुर्य समुद्र सुहाई । सब वैभव जहँ जाइ विलाई ।।
मुख्य रसिक जन लए सँग जाई । मातु पिता कोशोस नवाई ।।
हस्त कमल पै शुक वैठारी । पुष्य नखत में करी तैयारी ।।
पुनि हरि जब मारग मैं आए । हरिण माल दाहिन दिखलाए ।।
पुनि हरि जिमि आगे चलिजाई । बैठी तरु पर श्याम चिराई ।।
बच्छ पियावत गैया पाई । सगुन देखि हरि गए हरषाई ।।
सँग में शुक वहु राग अलापत । नदी और नद वन गिरिलाँधत ।।
शुक सों वात करत अब शेषी । रूप युक्त वृज-सीमा देखी ।।
दूरहिं ते वृज पड़ो दिखाई । हर्षितमनहुँ रंक धन पाई ।।
सुखी भए सव प्रभु अवलेखी । सब के मन अति हष विशेषी ।।
विरह दशा देखी वृज केरी । अतिकरुणाप्रद जाय न हेरी ।।

दोहा– धरि अधरन पै वैन, दीन्ह वजाय उलास ।
सुनि वंशी ध्वनि व्रज के, सवहि जिए विनु श्वांस ।।५६।।

चौ० वेणु वजत सव भए सुखारी । जंगम स्थावर तनुधारी ।।

Scanned by TapScanner

यमुन अनन्दहिं भुजा पसारी । आलिङ्गन करि भई सुखारी ।।
पुलिन बैठि विश्राम बिचारी । कीन्हीं वृज-प्रवेश तैयारी ।।
तव शुक को प्रभु आज्ञा दीन्हीं । नन्देशुर उन रास्ता लीन्हीं ।।
मूर्छा से सब जागि गयी हैं । अचरज से वृज वदलि गयी है ।।
तरु पल्लव फूले वहु भाँती । वृज की दशा कहीना जाती ।।
पूनि यमुना देखी नंद नंदन । रूप माधुरी आनद कंदन ।।
कियो कृष्ण को विन्दे प्रनामा । अहो तात तुम पूरन कामा ।।
पुनि भेंटीं सब हृदय लगाई । नाथ ! दिनन में करी अवाई ।।
नयनन वहै अश्रु की धारा । हिलकि २ जल वहै अपारा ।।
अहो भाग्य हरि वृज में आवन।वृज वासिन कर किये जिलावन ।।
मन मुस्काय यों कहत कन्हाई । राधे दरश करौं मैं जाई ।।
हमरो समाचार तुम जाई । विन्देहिं जाइ कहहु हरषाई ।।
तनु प्रमुदित मुख सुन्दर वानी । विंदेश्याम के रूप लुभानी ।।
कछुक देर में कुंजन जाई । राधे दशा विलोकी जाई ।।

दोहा—सखिन सहित राधे लली, करि रही सोच विचार ।
केहि कारन वन में फले, फूले पात और डार ।।५८।।

चौ० वाम नेत्र और भुजा सुहाती । फरकहिं सगुन हेतु वहु भांती ।।
मन प्रसन्न तनु तेज गिराजै । श्याम मिलन के सगुन वतावै ।।
कै सुअना हरि कौ लै आयो । खवरि हमारी उन्हें सुनायो ।।
हमें तो ऐसो ही दर्शावत । ताही समय विन्देहू आवत ।।
वोलो प्यारी सों मुसकाई । हरि आवन की खवरि जनाई ।।
वात सुनत रोमांच भयो है । विन्देहु ने अति सुख लयो है ।।

विरह अगनि सब दूरि भई है। अब आई आनन्द घरी है।।

दोहा–मोहिनी लोभी श्यामरंग, जगसों भई उदास।

मनु भरि पियो मधुररस, अजहुँ मिटी नहिं प्यास ।।६०।।

चौ०वृज में श्री घनश्याम विराजत। वर्षा ऋतु सम परम सुहावत ।।

काले घन नभ पर घिरि आये। वृज के रसिक मोर तरसाये ।।

दोहा–ऐसेहिं समझौ गोपजन, श्याम प्रेम रस लीन।

श्याम प्रेम में वे सभी, भए विरह में दीन ।।६१।।

चौ० कहुँ 2 बोलें चातक मोरा। वृज में रसिक फिरत चहुँओरा ।।

विरह अग्नि अब शान्ति भई है। प्रीति हृदय सरसाय रही है।।

गोपी प्रेम हिंडोले झूलैं। गीतमल्हार मधुरस्वर बोलैं ।।

दोहा–हरिपद रज की टहलकूँ, लक्ष्मी हू ललचाय।

शुक सनकादि लुभात सब, तऊ फल पावत नाय ।।६२।।

वृज रमणिन सेवा दई, सो करि किरपा कोर।

क्षण २ रस वरषत रहत, रहि २ प्रेम झकोर ।।६३।।

अब करि किरपा नागरी, अहो पिया रस खानि।

सोह टहल मोहि दीजो, यह माँगति वरदान ।।६४।।

।। इति शुभम् ।।

Scanned by TapScanner

शुद्धि—पत्र

सफा	सतर	अशुद्ध	शुद्ध
५	८	गाति	गात
८	१८	वनगिरिराज	कव वन गिरिराजहि
१२	१७	व्रज-गारी	व्रज-गोरी
१६	८	धर्य	धौर्य्य
१६	१५	वोलत	बोरत
२०	१०	मम	मर्म
२५	१५	मत	मात
२५	१६	मिलतन	मिलत
२७	६	देसि	देखि
२८	१०	पूंछग्रह	पूर्छंग्रह
२८	१६	पान	यान
३२	५	घर	घट

०—०

Scanned by TapScanner

बाँसुरी महिमा

रवि तनुजा तट कुंज को ओट, मुरारी ने वासरु एकु वितायो ।
राधा की वाट में वैठि विहाल ह्वै, शाम गयी घर हू नहिं आयो ।।
सोचु भयो जसुदा मन में इत, लाल कहाँ केहि ने विलमायो ।
ढूंढ्यो गयो जब रैनि गये, जमुना तट वंशी वजावतु पायो ।।
क्रोधित मातु लगी तव पूछन, कान्ह के कान कमान से तानी ।
क्यों रे ? तू आयो यहाँ केहि कारन ! कालिन्दी कूल करी महिमानी
वंशी की तान में झूमि रह्यो, नहिं जानि परी तोहि मातु अजानी ।
कान्ह कहैं जनि मातु रिसाय, हौं रोकि लियो जमुना निशि जानी ।।
सीखन चाहि रह्यो जमुना जलु, वंशी की तान हमारी सुहानी ।
सो हौं सिखायो गयो दिनु पूरो, न छांड़ि रह्यो निशि हू में निदानी ।।
मातु नशै कलि में जब सांचु, न रहिहै कहूँ कोऊ धर्म निशानी ।
धर्म दिशै तव ये मुरली ध्वनि, जो जमुना की तरंग समानी ।।
मौन भई जसुदा तेहि काल, सुने जव कान्ह के वोल सुहाने ।
प्रेम के आंसू लगे ढरने, जव लाल के नैन निहाल ह्वै जाने ।।
बोली चलौ घर कौ अव कान्ह, तुम्हें हैं 'दुवे' के दरिद्र मिटाने ।
बाँसुरी में गुन तेरी महान, जो कालिन्दी ने निज नीर में साने ।।

—पं. जयजयराम 'दुवे'

Scanned by TapScanner

❋ बृज महिमा ❋

तीन लोक से अलग बृज, नर देखहु करि ध्यान।
नारद आदि मुनीन ने, महिमा करी बखान ॥१॥
तीन लोक चौदह भुवन, बृज सब को सिर मौर।
तहाँ प्रलय व्यापै नहीं, मो कहुँ देवहु ठौर ॥२॥
सुर पुरको चाहत नहीं, चहू न पद निर्वान।
चरणांकित बृज रज चहूँ, सुनियो श्री भगवान ॥३॥
बृज रज है चिंतामणि, ताहि छांड़ि कहँ जाहुँ।
भक्त वत्सल मेरे प्रभु, मेरो प्रेम निबाहु ॥४॥
बृज रस में रति होय मम, यह वर मोकूं देहु।
और कछू वाच्छा नहिं, जानहु मेरो नेहु ॥५॥
कल्पतरु चहिये नहिं, चहिये न आम रसोल।
आँक ढांक आछे लगैं, बृज के कंट करील ॥६॥
श्री बृन्दावन धाममें, प्रभु जी लेहु बसाय।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, तेरोहि रूप लखाय ॥७॥
राधा रमन मन भावते, पूजहु मेरी आस।
श्री चरणों के दर्श की, बहुत बढ़ी है प्यास ॥८॥
कूकर शूकर योनि में, बृजहिं जन्म मोहि देहु।
पद चिन्हाङ्कित भूमि में, होवै मेरो नेहु ॥९॥
सब लोकन ते विलग है, श्री बृन्दावन धाम।
जहँ नित गोपी नाचतीं, वेनु वजावत श्याम ॥१०॥

Scanned by TapScanner

॥ श्री राधारमणाय नमः ॥

श्री मोहिनीदेवी जी की प्रकाशित पुस्तकें

१. श्री गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र हिन्दी पद्यानुवाद

२. श्री भजन तरंगिणी

३. श्री कविता कुंज

४. श्री राधारमण पदावली

५. श्री शुकदूत

अप्रकाशित ग्रन्थों की सूची

१. श्रीकृष्णायन

२. श्रीकृष्ण अवतार का संक्षिप्त चरित्र

३. श्री गौराङ्ग अवतार

४. अनेक अवतारों के संक्षिप्त चरित्र

५. व्रजमहिमा

६. बृन्दावन वास उत्कंठा

७. सप्तसती

८. हंसदूत

९. नारद चरित्र

१०. कुमार चरित्र आदि आदि

पुस्तक मिलने का पता--गोस्वामी श्री अरविंद लोचन जी महाराज,
राधारमण मार्ग, बृंदावन, जि. मथुरा।

मुद्रक-श्री हरि मोहन इ० प्रिंटिंग वर्क्स, तिलक मार्ग सी. स्कीम, जयपुर।

Scanned by TapScanner